

अन्तरा भाग-1 (गद्य-खण्ड)

पाठ-1

ईदगाह

विधा – कहानी

कहानीकार – प्रेमचन्द

जीवन-परिचय- जन्म सन् 1880 में वाराणसी जिले के लमही ग्राम में। मूल नाम धनपतराय। प्रारम्भिक शिक्षा वाराणसी में। असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र। उर्दू में नवाबराय के नाम से लेखन कार्य। सन् 1915 में पहली कहानी 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित। मृत्यु सन् 1936 में।

मुख्य रचनाएँ –

कहानी संग्रह – मानसरोवर (आठ भाग), गुप्तधन (दो भाग)

उपन्यास – निर्मला, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान

नाटक – कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी।

निबंध-संग्रह – विविध प्रसंग (तीन खंडों में) कुछ विचार।

संपादन कार्य – माधुरी, हंस, मर्यादा, जागरण।

साहित्यिक विशेषताएँ

प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में जनसाधारण की वेदना तथा सामाजिक कुरीतियों का मार्मिक चित्रण किया है। उनकी कहानियाँ भारत की संस्कृति एवं ग्रामीण जीवन के विविध रंगों से सराबोर हैं।

भाषा-शैली

इनकी भाषा सजीव मुहावरेदार तथा बोल-चाल के निकट है। तत्सम् तथा उर्दू शब्दों का सुन्दर प्रयोग।

शैली

भावपूर्ण, वर्णनात्मक तथा संवादात्मक।

पाठ— परिचय

प्रेमचन्द द्वारा लिखित कहानी 'ईदगाह' भावनात्मक एवं बालमनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। कहानी का प्रमुख पात्र हामिद है। जो अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। हामिद के चरित्र के माध्यम से अभावग्रस्त जीवन के कारण बच्चे का समय से पहले समझदार होना और इच्छाओं का दमन करना दर्शाया गया है। किस प्रकार बच्चा (हामिद) परिस्थितियों से समझौता करना सीख जाता है, यह बताया गया है।

स्मरणीय बिन्दु

ईद के अवसर पर गाँव में ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। सभी लोग कामकाज निपटाकर ईद के मेले में जाने की जल्दी में हैं। बच्चे सबसे ज्यादा खुश हैं। उन्हें गृहस्थी की चिंताओं से कोई मतलब नहीं, उन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि उनके अब्बाजान ईद के लिए पैसों का इंतजाम करने चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं और यदि चौधरी पैसे उधार देने से मना कर दे तो वे ईद का त्योहार नहीं मना पाएँगे। उनका यह ईद की खुशी का अवसर मुहर्रम जैसे मातम में बदल जाएगा। बच्चों को तो बस ईदगाह जाने की जल्दी है।

हामिद चार-पाँच साल का दुबला-पतला लड़का है, वह अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। उसके माता-पिता गत वर्ष गुज़र चुके हैं, परन्तु उसे बताया गया है कि उसके अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं और उसकी अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं। इसीलिए हामिद आशावान है और प्रसन्न है।

अमीना स्वयं सेवैयों के इंतजाम के लिए घर पर रहकर हामिद को तीन पैसे देकर मेले में भेज देती है। हामिद के साथ उसके दोस्त मोहसिन, महमूद, नूरे और सम्मी भी हैं।

गाँव से बच्चे मेले की ओर चले, हामिद भी साथ में था। रास्ते में बड़ी-बड़ी इमारतें, फलदार वृक्ष आए। बच्चे कल्पनाशील होने के नाते तरह-तरह की कल्पनाएँ तथा उन चीजों पर टीका-टिप्पणी करते आगे बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में पुलिस लाइन आने पर एक ने कहा—यहाँ सिपाही कवायद करते हैं। मोहसिन का कहना था कि यहीं पुलिस वाले चोरी भी करवाते हैं। हामिद को सुनकर आश्चर्य होता है। इस प्रकार बालकों में पुलिस के प्रति अलग-अलग विचारधारा थी।

ईदगाह में नमाज का नजारा अलग ही था। नमाज के समय लाखों सिर एक साथ सज़दे में झुकते हैं तथा एक साथ उठते हैं। ऐसा प्रतीत होता है उनके मन में अपार श्रद्धा का भाव होता है। उनके भीतर की भाईचारे की भावना उनको आपस में जोड़े रखते है। धर्म आपस में लोगों को जोड़ता है, तोड़ता नहीं। धर्म के नाम पर

तोड़ने वाले धर्म के रहस्य को समझते ही नहीं। कोई भी धर्म मनुष्य—मनुष्य के बीच भेद नहीं करता।

ईदगाह में नमाज के पश्चात् हामिद के दोस्त चर्खियों पर झूलते हैं परन्तु हामिद दूर खड़ा रहता है। खिलौनों की दुकान से महमूद सिपाही, नूरे वकील, मोहसिन भिश्ती तथा सम्मी धोबिन खरीदता है। हामिद खिलौनों की निंदा करता है परन्तु साथ ही ललचाई निगाहों से उन्हें देखता भी है सभी मित्र मिठाईयाँ खरीदते हैं और हामिद को चिढ़ा-चिढ़ाकर खाते हैं।

मेले के अंत में लोहे की दुकान पर चिमटा देखकर हामिद को अपनी दादी का ख्याल आता है। दुकानदार से मोलभाव करके वह चिमटा खरीद लेता है। हामिद के तर्कों के कारण उसके सभी दोस्त उसके चिमटे से प्रभावित हो जाते हैं। घर पहुँचकर दोस्तों के खिलौने किसी न किसी प्रकार टूट जाते हैं।

हामिद के घर पहुँचते ही दादी अमीना उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी पर अचानक हाथ में चिमटा देखकर वह चौंक गई। पूछने पर हामिद बताता है कि उसने मेले से तीन पैसे का चिमटा खरीद लिया। दादी उसकी नासमझी पर क्रोधित होते हुए पूछती है कि पूरे मेले में उसे कोई और चीज़ खरीदने के लिए नहीं मिली। हामिद अपराधी भाव से बताता है कि दादी की उँगलियाँ तवे से जल जाती थी, इसलिए उसने चिमटा खरीदा। यह सुनकर बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया।

दादी अमीना हामिद के त्याग, उसका स्नेह, उसका विवेक देखकर हैरान रह गई। सुबह से भूखा बच्चा, दूसरों को मिठाई खाते देख, कैसे इसने अपने मन को मनाया होगा। मेले में भी इसे अपनी बूढ़ी दादी की याद बनी रही। यह सब सोचकर अमीना का मन गदगद हो गया।

दादी अमीना एक बालिका के समान रोने लगी। वह दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जा रही थी तथा आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जा रही थी। परन्तु हामिद इस रहस्य को समझने के लिए बहुत छोटा था कि दादी उसके त्याग का अनुभव कर भाव—विभोर हो गई। हामिद यह नहीं समझ पा रहा था कि वह तो दादी के लिए चिमटा लाया है तो फिर दादी रो क्यों रही हैं।

सप्रसंग व्याख्या :-

व्याख्या हेतु अनुच्छेद “हामिद खिलौनों की निंदा करता है—

मिट्टी ही के तो हैं.....विशेषकर जब अभी नया शौक है

पाठ का नाम — ईदगाह

लेखक का नाम — प्रेमचन्द

प्रसंग — प्रस्तुत पाठ में लेखक ने ईद के अवसर पर सर्वत्र छाई खुशी का वर्णन किया है। इस गद्यांश में हामिद के माध्यम से बालसुलभ इच्छाओं व चेष्टाओं का सुन्दर व सजीव वर्णन किया गया है।

व्याख्या — हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं जिन्हें वह खिलौने और मिठाईयों पर खर्च नहीं कर पाता जबकि उसके साथी रंग-बिरंगे व सुन्दर खिलौने खरीदते हैं। ऐसे में हामिद अपने को समझाने के लिए खिलौनों की निंदा करता है कि मिट्टी के हैं और जमीन पर गिरते ही टूट जाएंगे। परन्तु उसका बालसुलभ मन उन खिलौनों को ललचाई नजरों से देखता है और कुछ देर के लिए उन्हें हाथ में लेकर देखना चाहता है। उसके हाथ अनायास ही खिलौनों की तरफ बढ़ते हैं परन्तु साथी भी उसकी तरह बच्चे ही हैं और उन्होंने खिलौने अभी-अभी लिए हैं अतः वे भी त्यागी नहीं हो सकते हैं। उनका खिलौनों से खेलने का शौक अभी नया-नया है।

विशेष

1. बाल मनोविज्ञान का बहुत ही सुन्दर व हृदयग्राही चित्रण।
2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आ गई है।
3. मिश्रित शब्दावली है।
4. भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा शैली सरल, सहज व प्रवाहमयी है।

व्याख्या अभ्यास—कार्य हेतु अनुच्छेद

1. इस्लाम की निगाह.....लड़ी में पिरोए हुए है।
2. बुढ़िया का क्रोध.....रहस्य क्या समझता।
3. रमजान के पूरे तीस रोजों.....तैयारियाँ हो रही है।
4. रोजे बड़े-बूढ़ों के लिए.....सारी ईद मुहर्रम हो जाए।
5. अभागिन अमीना.....चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

विचारणीय प्रश्न

1. 'ईदगाह' कहानी के आधार पर प्रेमचन्द कालीन ग्रामीण जीवन की छवि प्रस्तुत कीजिए।

2. छोटे बच्चों की बातचीत में युगीन परिस्थितियाँ किस प्रकार झलकती हैं, उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए ।
3. दादी ने हामिद को अकेले मेले में क्यों भेजा?
4. पुलिसकर्मियों के बारे में हामिद और मित्रों की क्या धारणा है?
5. हामिद के मित्रों ने मेले से क्या-क्या खरीदा?
6. हामिद के हाथ में चिमटा देखकर दादी क्यों क्रोधित हो गई ?
7. बच्चों ने चौधरी के पास जिन्नात होने की बात क्यों कही?
8. दादी का क्रोध स्नेह में क्यों बदल गया?
9. 'हामिद इसका रहस्य क्या समझता' —यहाँ मुंशी प्रेमचन्द किस रहस्य की ओर संकेत कर रहे हैं?
10. हामिद की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने उसे कहानी का नायक बना दिया?
11. 'बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई'— कैसे ?
12. 'ईदगाह' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।
13. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए क्या-क्या तर्क दिए?
14. आशय स्पष्ट कीजिए —
 - क) 'उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा । विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी ।
 - ख) 'उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए ।'
 - ग) 'मानों भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है ।

अभ्यास—प्रश्न (उत्तर सहित)

1. हामिद की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए । जिन्होंने उसे कहानी का नायक बना दिया ।
- उत्तर— 'ईदगाह' कहानी में हामिद ही एकमात्र ऐसा पात्र है जो पाठकों को सबसे अधिक प्रभावित करता है । उसके जिन गुणों ने उसे कहानी का नायक बना दिया, वे निम्नलिखित हैं—

- i) हामिद एक तर्कशील बालक है। वह अपने तर्कों से अपने साथियों को पराजित कर देता है।
- ii) हामिद एक समझदार बालक है। वह व्यर्थ की चीजें नहीं खरीदता और स्वयं पर नियंत्रण रखता है।
- iii) हामिद दादी के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। तभी तो वह मेले में अपने लिए कुछ न खरीदकर दादी के लिए चिमटा खरीद लाता है।

2. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए क्या-क्या तर्क दिए?

उत्तर — हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए—

- i) चिमटा बड़े काम की चीज है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो, दूसरे को आग पकड़ा दो।
- ii) खिलौने तो थोड़ी ही देर में टूट-फूट जाते हैं जबकि चिमटे का कुछ नहीं बिगड़ता।
- iii) चिमटे को देखकर अम्मा खुश हो जाएगी। वह मुझे दुआएँ देगी।
- iv) चिमटा एक खिलौना भी है, इसे कंधे पर रखो तो बंदूक हो जाती है, हाथ में लो तो फकीरों का चिमटा। इससे मजीरे का काम भी लिया जा सकता है।
- v) चिमटे का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। चिमटा-खिलौनों का बादशाह, रुस्तमे हिंद सिद्ध हुआ।

3. 'ईदगाह' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए, क्या इस कहानी का कोई अन्य शीर्षक हो सकता था?

उत्तर— 'ईदगाह' कहानी का शीर्षक सर्वथा उचित है। इस कहानी की प्रमुख घटनाएँ ईदगाह स्थल के इर्द-गिर्द घटित होती हैं। ईदगाह कहानी का केन्द्र स्थल है। कहानी के प्रारंभ में वहीं जाने की तैयारियाँ होती दर्शायी गई हैं। ईदगाह पर ही नमाज पढ़ी जाती है। वहीं एकता व भ्रातृत्व का दृश्य दिखाई देता है। वहीं मेला लगता है जहाँ ईद की चहल-पहल है। यह शीर्षक कहानी के प्रमुख स्थल के आधार पर है। अतः पूर्णतः उचित एवं सार्थक है।

अन्य शीर्षक हो सकते हैं— 'हामिद का चिमटा' अथवा 'ईद का उपहार'।